प्रेस विज्ञप्ति
14.01.2025

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी), श्रीनगर ने फर्जी क्रिप्टोकरेंसी घोटाले में जम्मू, दिल्ली और सोनीपत (हरियाणा) में स्थित 3.66 करोड़ रुपये की अचल संपत्तियों को अस्थायी रूप से कुर्क कर लिया है। यह घोटाला “इमोलिएंट कॉइन” के नाम से जाना जाता है, जिसे मेसर्स द इमोलिएंट कॉइन लिमिटेड, यूके नामक कंपनी के तहत चलाया जा रहा था। भारत में कंपनी का प्रतिनिधित्व नरेश गुलिया (भारत और विदेश में प्रमोटर) द्वारा किया जाता था।

ईडी ने लद्दाख पुलिस द्वारा लेह, लद्दाख के पुलिस स्टेशन में भादस, 1860 की धारा 420 के तहत अतीउल रहमान मीर (लेह निवासी) और अजय कुमार उर्फ अजय कुमार चौधरी (जम्मू निवासी) के खिलाफ अवैध फर्जी क्रिप्टोकरेंसी स्कीम “इमोलिएंट कॉइन” के मामले में दर्ज एफआईआर के आधार पर जांच शुरू की।

ईडी की जांच से पता चला कि नरेश गुलिया वास्तविक मास्टरमाइंड था, जो नकली क्रिप्टोकरेंसी "इमोलिएंट कॉइन्स" और चेन (मल्टी–लेवल) मार्केटिंग व्यवसाय बेचने के कारोबार को चलाने के लिए "द इमोलिएंट कॉइन लिमिटेड" कंपनी का प्रमोटर और प्रबंधन करता था। उन्होंने उक्त धोखाधड़ी योजना के लिए एक नकली मोबाइल एप्लिकेशन "इमोलिएंट कॉइन" भी डिजाइन और प्रबंधित किया, जो नरेश गुलिया के नियंत्रण में था। हालांकि, उक्त कंपनी को जानबूझकर 05-03-2019 को बंद कर दिया गया और भंग कर दिया गया। इसके बाद, बुरी नीयत से, नरेश गुलिया ने नकली क्रिप्टोकरेंसी "इमोलिएंट/टीईसी कॉइन" की उक्त पोंजी योजना को चलाने के लिए 25-03-2019 को अपने पंजीकृत कार्यालय के साथ एक और कंपनी "मेसर्स टेक कॉइन लिमिटेड" (पंजीकरण संख्या 11903739) को उसी पते–90, पॉल स्ट्रीट, ओल्ड स्ट्रीट, शोरेडीच, लंडन, यू.के. पर पंजीकृत किया, जहां इमोलिएंट कॉइन लिमिटेड पंजीकृत थी। सितम्बर 2019 में नरेश गुलिया द्वारा लॉक-इन अवधि पूरी होने से पहले ही जानबूझ कर उक्त नकली सिक्के का मूल्य कम कर दिया गया तथा अक्टूबर-नवम्बर 2019 के महीने में उक्त मोबाइल एप्लीकेशन अचानक काम करना बंद कर दिया गया। इस प्रकार नरेश गुलिया ने अतीउल रहमान मीर तथा अजय कुमार चौधरी के साथ मिलीभगत करके सैकड़ों भोले-भाले लोगों को ठगा जिन्होंने अपनी मेहनत की कमाई गँवा दी। हालाँकि, 12-01-2021 को कंपनी को बंद/भंग भी कर दिया गया।

जांच के दौरान पता चला कि नरेश गुलिया, अतीउल रहमान मीर और अजय कुमार चौधरी ने अपराध से 16.81 करोड़ रुपये की कमाई की है, जो लेह के निर्दोष निवेशकों की गाढ़ी कमाई ही है।

आगे की जांच जारी है।